खण्ड-11, अंक-1, वर्ष-2023, मु0प्र0 10-16
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v11i1.2
SJIF (2023) : 8.124

शोध पत्र

Ecofeminism: Global Philosophy

Rashmi Tewary
Ram Niwas, Moti Nagar, Lucknow-226 004, U.P., India
rashmitewary@hotmail.com

Received: 30-07-2023, Accepted: 03-11-2023

Abstract- Ecofeminism, a branch of feminist philosophy which explores the relationship of degradation of nature and active involvement of women. Early ecofeminist movements had their roots in resisting patriarchal and capitalistic control over natural resources and were led by women groups. Ecofeminism as a movement is intersectional in nature. The first part contains environmental and feminist issues. The feminist category is feminism that emerges at the grassroots. Thus the primary participants in this movement have been women from marginalised rural groups who are directly impacted by environmental degradation. Ecofeminism is often missing from narratives of feminism because with in the model of feminism, there is a empowering of certain issues such as civil and political rights.

Key words- Ecofeminism, Patriarchal, Feminism, Environment, Gender equality

पारिस्थितिक नारीवादः वैश्विक दर्शन

रश्मि तिवारी
राम निवास, मोतीनगर, लखनऊ–226 004, उ0प्र0, भारत
rashmitewary@hotmail.com

सार– पारिस्थितिक नारीवाद, नारीवादी दर्शन की एक शाखा है जो प्रकृति सन्दोहन और महिलाओं की भूमिका के मध्य सम्बन्ध का अवलोकन करती है। प्रारंभ में पारिस्थितिक नारीवादी आंदोलनों की जड़ें प्राकृतिक संसाधनों के पितृसत्तात्मक और पूंजीवादी नियन्त्रण के विरोध में थी, जिनका नेतृत्व महिला समूहों द्वारा संचालित था। पारिस्थितिक नारीवादी आंदोलन प्रकृति प्रतिच्छेदन से प्रभावित थे और नारी सशक्तिकरण उनका केन्द्र था। इनकी मूलभूत संरचना हांशिये में सिमटे नारी एवं कृषक वर्ग की समस्याओं के समाधान पर आधारित था, जो प्रकृति संदोहन से सीधे तौर पर जुड़े हैं।पारिस्थितिक नारीवादी आख्यान बहुधा अपने स्वरूप से बिखर जाता है, क्योंकि इन आंदोलनों के आदर्श कुछ अन्य मानवीय एवं राजनैतिक विशेषाधिकारों से सम्बंधित विषयों का समाधान करने के लिए भी तत्पर है।

बीज शब्द– पारिस्थितिक नारीवाद, पितृसत्तात्मक, नारीवाद, पर्यावरण, लैंगिक समानता।

1. **परिचय–** आज के समय में सर्वाधिक चर्चित मुद्दों की बात करें तो महिला उत्पीड़न एवं प्रकृति संदोहन मुख्य है। इस तथ्य को गंभीरता से लिया गया और नारीवादी विचारधारा को अन्य सामाजिक परिकल्पनाओं में पिरोकर एक नए सिद्धांत की रचना हुई, जिसका नाम था–पारिस्थितिक नारीवाद, चेन लिंगके अनुसार इसे सामाजिक लिंग विभेदन पर आधारित पारिस्थितिक आलोचना कहा जा सकता है।[1] पारिस्थितिक नारीवाद, विभिन्न बौद्धिक आंदोलनों एवं प्राचीन ज्ञान से विकसित एक नवीन शब्द है। इसका उदय 1970 के अन्त और 1980 के प्रारंम्भिक काल में हुआ, जिसका आधार वैश्विक शान्ति, समलैंगिक नारीवाद, लैंगिक समानता, पर्यावरणीय सुरक्षा एवं संरक्षण था। पारिस्थितिक नारीवाद को परिभाषित किया जा सकता है–नैतिक मूल्यों से जुड़े सामाजिक आंदोलन के रूप में। यह राजनैतिक विश्व पटल पर व्यक्त एवं विश्लेषित हुआ– पितृसत्तात्मक सोच, लैंगिक समानता, पर्यावरण उत्थान जैसे जटिल सामाजिक समस्याओं के समाधान को लेकर। इस आंदोलन से जुड़ा पहला सम्मेलन एमहर्स्ट(1980) में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इसके परिणामों से स्पष्ट हुआ कि पुरुष–नारी समानता, नारी की आर्थिक उन्नति पर निर्भर करती है।सतत् विकसित होते नारीवाद की इस शाखा में देखा गया कि पर्यावरण का मूलभूल सम्बन्ध नारी से किस तरह से है। कुछ नारीवादी विचारकों ने ध्यान आकर्षित किया लिंग अवधारणा द्वारा नारी और प्रकृति के बीच सम्बन्ध का, उनके अनुसार नारी और प्रकृति पर पितृसत्तात्मक शासन एक पारम्परिक संस्कृति है, जिसे नियंत्रित करना अति आवश्यक है। अतः स्वस्थ असत्तात्मक सामाजिक स्वरूप के निर्माण के लिए आधारभूत संरचना को पुनः संयोजित करना होगा जिसकी नींव शान्ति, आहिंसा, प्रेम, लैंगिक समानता और प्राकृतिक सम्पदा के विकास एवं उत्थान पर रखी जाये।

2. **विकास–** पारिस्थितिक नारीवाद का विकास मूलतः तीन चरणों में हुआ–

प्रथम चरणः 1960 के दशक में जब अमेरिकी महिलाओं ने नाभिकीय ऊर्जा संयंत्र का वहिष्कार किया, भारत में **चिपको आंदोलन** और केन्या का ग्रीन बेल्ट आन्दोलन प्रारम्भ हुआ।
द्वितीय चरणः 1070–1980 इस अवधि में पारिस्थितिकी नारीवाद की विचारधारा और सिद्धांतो का प्रसार एवं प्रतिपादन हुआ।
तृतीय चरणः 1980 के उपरांत, अब पारिस्थितिक नारीवाद स्थापित हो चुका और उसका सतत विकास हो रहा है।

3. **प्रारूप–** पारिस्थितिक नारीवाद का प्रारूप तैयार करने का श्रेय फ्रैंच नारीवादी चिंतक फ्रांस्वा डी उबोन को जाता है, जिन्होंने 1974 में प्रकाशित पुस्तक **ले फेम्निजम ओ लो मार्ट** में इसका उल्लेख किया था। उनके अनुसार वर्तमान में पारिस्थितिक संकट पुरुष केन्द्रित है।[2,3] आज के संदर्भ में यह आन्दोलन प्रासंगिक है। प्राचीन काल में कृषि का अधिकार नारी के पास था, समय अन्तराल में यह पुरुष वर्ग को हस्तान्तरित हो गया और परिवार को सम्भालने की जिम्मेदारी नारी पर आ गई। इस तरह उत्पादन में गिरावट आयी और प्रकति क्षरण आरंभ हुआ।[4]

नारी और प्रकृति दोनो में ही प्रजनन क्षमता,उर्वरता, सहनशीलता और पोषण जैसे गुण मौजूद हैं इसलिए उनका शोषण होता है। परंपरागत समाज में नारी को मानसिक और शारीरिक रूप से कमजोर करार दिया गया और उसे सिर्फ उपयोग एवं उत्पीड़न के योग्य माना गया, नारी का यह गुण प्रकृति से समानता रखता है।[5]इसके अलावा अल्पसंख्यक समुदाय, आदिवासी समुदाय, रंग–भेद, नस्ल–भेद, लैंगिक–असमानता, धर्म एवं भाषा–भेद जैसे दमनकारी समाज में परंपरा व्याप्त है, जो मानवता के लिए अभिशाप हैं। पारिस्थितिक नारीवाद इन सभी उद्देश्यों को लेकर सतत् आगे बढ़ रहा है। शिक्षा, समानता और निष्पक्ष जानकारी ही समस्याओं एवं कुरीतियों का समाधान है।[6] पारस्थितिक नारीवादी विचारकों ने गहन अध्ययन के बाद पाया कि नारी और प्रकृति, साहित्य, धर्म और संस्कृति में एक–दूसरे के समानांतर हैं, वे आत्मनिर्भर हैं एवं किसी की व्यक्तिगत सम्पदा नहीं हैं, दोनों ही आदरणीय हैं अतः उन्हें शासन एवं संरक्षण की आवश्यकता नहीं है।[7]

4. **पारिस्थितिक नारीवाद की प्रकृति–** पारिस्थितिकी नारीवाद के सामान्य एवं प्रमुख गुणों के अवलोकन करते समय यह तथ्य स्पष्ट होता है कि नारी और प्रकृति दोनों में सहयोग, पोषण और देखभाल जैसे पारस्परिक सहसम्बंध पाये जाते हैं। यह सर्वभौमिक व्यवस्था का पक्षधर है, जिसका मानना है कि प्राकृतिक सम्पदा एवं स्रोतों का अवांछनीय और असीमित उपयोग, शहरीकरण, औद्योगीकरण जैसे विकास के मुद्दे मानवता के लिए हानिकारक है। अतः पारिस्थितिक नारीवाद एक ऐसा सामाजिक आन्दोलन है जो मानव जीवन के उत्थान के लिए नैतिक मूल्यों का अभ्यास कर सुदृढ़ परम्परा को स्थापित करना चाहता है।[8]

चिपको आन्दोलन इस बात को उजागर करता हैं कि नारी सदैव से प्रकृति संरक्षण की पक्षधर रही है। **नर्मदा बचाओ** आन्दोलन के संदर्भ में मेधा पाटकर एक जाना–माना नाम है। पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय भूमिका के लिए उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय **ग्रीन रिबन** पुरुस्कार से सम्मानित किया गया। वन्दना शिवा, सुनीता नारायण और तुलसी गौड़ा इसी क्रम के चर्चित नाम हैं। किसी प्रयास का सफल होना अधिकांशतः महिलाओं की प्रतिभागिता पर निर्भर करता है। **कार्ल मार्क्स** का कथन है **महिलाओं के सहयोग के बिना किसी भी बड़े क्रान्तिकारी सामाजिक परिवर्तन का होना असंभव है**। पर्यावरण प्रबन्धन एवं विकास में महिलाओं का योगदान प्रशंसनीय है।

5. **लिंग प्रकृति–** विचारक **जे.एस.मिल** ने 19वीं सदी में कहा कि**–महिला, पुरुष की अंतरंग दास है**। 1975 में **रोजमेरी रेडफोर्ड रुथेर** ने अपना विचार प्रकट किया और कहा कि आज समाज में नारी मुक्ति के सभी मार्ग अवरुद्ध हैं। ऐसे समाज में पारिस्थितिक संकट का कोई हल नहीं है, जिनके सम्बंधों का मूल वर्चस्व जाति, वर्ग, लिंग, यौन अधिन्यास पर आधारित हो। यह दृष्टिकोण बुनियादी तौर पर सामाजिक, आर्थिक सम्बन्धों और समाज में अन्तर्निहित मूल्यों के आमूल परिवर्तन की कल्पना करता है। अतः महिला आन्दोलन एवं प्रकृति संदोहन के मध्य एक भावनात्मक सम्बन्ध है। पारिस्थितिक नारीवादी के अनुसार पूंजीवाद सिर्फ पितृसत्तात्मक मूल्यों को दर्शाता है अतः इसके द्वारा नारी उत्थान सम्भव नहीं हो सका, साथ ही साथ प्रकति और संस्कृति का सम्बंध भी क्षतिग्रस्त हुआ।[9] आज की परिस्थिति में नारी और प्रकृति दोनों ही शोषण का अभिशाप झेल रहे हैं।

6. **अन्तर्राष्ट्रीय प्रयास– कैरन वारेन ने एल्डोलियो पोल्ड** के निबंध **लैंड एथिक** (1949) को पारिस्थितिक नारीवाद के अंकुरण के लिये एक मौलिक रचना के रूप में सूचीबद्ध किया है। वे प्रकृति के जैविक और अजैविक घटकों के बीच अटूट सम्बंध को समझते थे और जिन्होनें एक नैतिक विचारधारा के लिए ठोस आधार प्रतिपादित किया। उनकी दूरदृष्टि ने पर्यावरण संरक्षण आन्दोलन की शुरुआत की।[10] पारिस्थितिकी नारीवादी समाजशास्त्रीय **प्रोफेसर सुसान ए मान** के अनुसार महिलाओं द्वारा निभायी गई भूमिकाओं और चल रहे आन्दोलनों को ही नहीं, बल्कि लिंग, जाति, वर्ग और पर्यावरणीय प्रसंगों एवं प्रकरणों के माध्यम से विभिन्न पृष्ठभूमि से आये आदिवासी महिलाओं की समस्याओं के समाधान हेतु यह एक सक्रिय मंच बना। इसके अलावा 20वीं सदी के अन्त में महिलाओं ने जैव विविधता, वन्य जीवन, भोजन, स्वास्थ्य, जल और वायु को बचाने के लिए प्रयास आरंभ किये हैं।

- **केन्या** में पर्यावरणीय राजनैतिज्ञ **वंगरी मथाई** द्वारा **ग्रीन बेल्ट आन्दोलन** की शुरुआत 1977 में हुई, जो महिलाओं के नेतृत्व में हुआ था, इसके द्वारा बढ़ते मरुस्थलीकरण को रोका गया। कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक गांव में 1000–5000 **वृक्षों** की **हरित पट्टी** का निर्माण किया गया और उसके प्रबन्धन का अधिकार प्रतिभागियों को सौपां गया। **हरित पट्टी** के विस्तारीकरण द्वारा जन मानस को सशक्त किया गया। यह आन्दोलन आज भी सक्रिय है।[11]
- **न्यूयॉर्क** शहर के पर्यावरणविद् **लोइस गिब्स** ने 1978 में एक जहरीले मलवा निष्कासन क्षेत्र पर कार्य किया। शहर की एक नहर जिसे **लव केनाल** कहते है उसे कल–कारखानों से निकले विषाक्त अवशिष्ट के निष्कासन का माध्यम बनाया गया। जिसकी वजह से वहां पर रहने वाले समुदाय में अनेक प्रकार के रोग पनपने लगे और गर्भवती महिलाओं के नवजात शिशुओं में जन्मजात अपंगता एवं अन्य विकृतियां दिखायी देने लगी। इस जानकारी के बाद **लोइस गिब्स** ने बस्ती में रहने वाले लोगों के साथ मिलकर एक **विद्रोह आंदोलन** की शुरूआत की, जिसके परिणामस्वरूप संघीय सरकार ने लगभग 800 परिवारों को सुरक्षित स्थानान्तरित कर जनता का सहयोग किया।[12]
- **यनेसट्रा किंग ने 1980** में महिलाओं के साथ मिलकर **पेंटागन** में एक शांतिपूर्ण विरोध का आयोजन किया और लैगिंक समानता को लेकर सामाजिक, आर्थिक और प्रजनन आधिकारों सहित, सरकार और सैन्य कार्यवाही का विरोध किया। इस आंदोलन को पेंटागन क्रिया के रूप मे में जाना जाता है।[13]
- **कनाडा** में **कात्सी कुक** द्वारा 1985 में **अक्वेस्ने मदर्स मिल्क प्रोजेक्ट** प्रारंभ किया गया था। यह सरकार द्वारा वित्त पोषित था, इसके द्वारा जांच की गई थी कि **मोहॉक आरक्षण** (एक चुना गया स्थान) के पास पानी के दूषित पदार्थों के उच्च स्तर ने बच्चों को कैसे प्रभावित किया। परिणामों से पता चला कि स्तन के दूध के माध्यम से **मोहॉक** के बच्चों को अन्य स्थान के अनारक्षित बच्चों की तुलना में 200 प्रतिशत अधिक विषाक्त पदार्थों के संपर्क में लाया जा रहा था। विषाक्त पदार्थ पूरी दुनिया में पानी को दूषित करते हैं, अतः मानव प्रजाति के संरक्षण के लिए पर्यावरणीय जल को विष मुक्त बनाना आवश्यक है।[14]

7. **कुछ राष्ट्रीय प्रयास–**

- **राजस्थान का खेजड़ी आन्दोलन** पर्यावरण चेतना का अद्वितीय उदाहरण है। सन् 1730 की बात है जोधपुर के महाराजा को अपना महल बनवाना था जब उन्हें लकड़ी की आवश्यकता पड़ी तो उनके सिपाही कुल्हाड़ी लेकर उस गाँव की ओर गये जहाँ बहुत सारे खेजड़ी के पेड़ लगे हुए थे। मगर गाँव की एक महिला अमृता देवी ने इसका विरोध किया और अपनी तीन बेटियों के साथ पेड़ों से लिपट कर अपने प्राणों को त्याग दिया। वह आज भी ग्रामीण महिलाओं के प्रेरणा स्रोत है जो पर्यावरण संरक्षण में संलग्न हैं।[15]
- **टिहरी गढ़वाल का चिपको आन्दोलन** की प्रमुख **गौरा देवी** ने स्थानीय लोगों के साथ मिलकर लकड़ी व्यापारियों को जंगल के पेड़ काटने से रोका, वे पेड़ो से लिपट गई यह कह कर कि **वन हमारा मायका है**। इस क्रान्ति ने भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन का उद्घोष किया। उनके प्रमुख सहयोगी थे **–गंगा देवी, बचना देवी, इतवारी देवी, हिमा देवी, मीरा बेन, सरला बेन, विमला बेन, छमुन देवी**। आन्दोलन को सशक्त बनाने के लिये **सुन्दर लाल बहुगणा, चंडी प्रसाद भट्ट, घनश्याम शैलानी, और धूम सिंह नेगी** का सहयोग अतुलनीय है।[16]
- **केरल के अलेप्पी जिले के मुतुकालम गावं** की रहने वाली **कोलकायिल देवकी अम्मा** पेड़–पौधे में रुचि रखती थी, उनके दादा जी वैद्य थे। बचपन के इस शौक ने उन्हें पर्यावरण संरक्षण का ज्ञान दिया, उन्होंने चालीस वर्ष की अवस्था तक सतत श्रम से लगभग दो सौ प्रकार के पेड़–पौधे का रोपण किया, जिसमें आम, इमली, सागौन, महोगनी, नीलगिरि एवं बांस शामिल हैं। इस तरह उन्होनें पांच एकड़ का जंगल तैयार किया। केरल सरकार ने उन्हें **वन मित्र** पुरस्कार प्रदान किया तथा उनकी इस उपलब्धि पर उन्हें अनेकानेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया।[17]
- चर्चित पारिस्थितिक नारीवादी विचारक **वन्दना शिवा** ने 1987 में **नवधान्य** संस्था की स्थापना की जिसका उद्देश्य पारजीनी बीजों पर अंकुश लगाकर जैविक खेती को प्रोत्साहित करना था। कृषि–वैज्ञानिकों की एक अवधारणा यह भी है कि बीजों और फसलों के अनुवांशिक बदलाव मानव के लिए घातक है, क्योकिं वह प्रकृति अनुकूल नहीं है।[18]
- भारत के ग्रामीण आंचल में आज भी महिलायें व्रत एवं त्यौहार के अवसर पर वृक्षों जैसे– पुत्रंजीवा, बरगद, पीपल, आंवला, अशोक, बेल, शमी, नीम, आम और तुलसी को पूजकर उनके संरक्षण की कामना करती हैं, जो प्रकति के साथ भावनात्मक जुड़ाव का प्रतीक है।

8. **नव–विज्ञान और पारिस्थितिक नारीवाद–** वन्दना शिवा और मारिया मिस ने1993 में आधुनिक विज्ञान के सापेक्ष पारिस्थितिक नारीवाद को सार्वभौमिक और मूल्य मुक्त प्रणाली के रूप में स्वीकृत कर एक मत प्रकट किया। वे आधुनिक विज्ञान की मुख्य धारा को वस्तुनिष्ठ विज्ञान के रूप में नहीं, अपितु पूरे विश्व के अनुसार मूल्यों के प्रक्षेपण के रूप में देखते हैं।[18] वैज्ञानिक उपलब्धियों के इतिहास और नियंत्रण के पन्नों में पुरुष चरित्रों का चित्राकंन महानतम रूप में दिखाई देता है, उदाहरण के तौर पर–शिशु–जन्म का चिकित्सीकरण और पौधों में प्रजनन और पारजीनी पौधों का निर्माण। पारिस्थितिक नारीवाद के अन्तर्गत लिखें साहित्य का दावा है कि पितृसत्तात्मक संरचनायें द्विआधारी विरोधाभास के माध्यम से अपने प्रभुत्व को सार्थक ठहराती हैं, यह दृष्टिकोण सत्य है पर सीमित नहीं है,–पृथ्वी–आकाश, मन–शरीर, नर–नारी, मानव–पशु, प्रकति–संस्कृति आदि।[19]

दोनों समानांतर सहयोगी होने पर भी विपरीत है। यह चिन्तन अद्भुत है, जिसका स्थापन उत्पीड़न को प्रोत्साहित कर समस्या को क्रियाशील रखता है।

8.1 **शाकाहारी पारिस्थितिक नारीवाद–** पशु अधिकारों एवं सुरक्षा के उद्देश्य से शाकाहारी पारिस्थितिक नारीवाद की स्थापना हुई। इस धारणा के अनुसार वन्य जीवों के प्रति हिंसा और उनका उत्पीड़न दोनों ही असंगत है, क्योंकि पारिस्थितिक नारीवाद शोषण के सभी रूपों की निन्दा करता है।[20] कई पारिस्थितिक नारीवादियों का मानना है कि मांसाहारी प्रवृत्ति पितृसत्तात्मक सोच का प्रदर्शन है। **ऑन द इश्यूज** के साथ 1995 में एक साक्षात्कार के समय **–कैरल जे. एडम्स** ने कहा–**हमारी संस्कृति में पुरूषवादी मानसिकता का निर्माण मांसाहार और प्रकृति के विभिन्न घटकों पर नियन्त्रण द्वारा किया जाता है**।[21] पशु एवं पक्षी प्रकति के जीते–जागते स्वरूप हैं। उनका संरक्षण हमारा कर्तव्य होना चाहिये न कि विनाश। शाकाहारी पारिस्थितिक नारीवादी नैतिक मूल्यों पर आधारित एक ऐसी प्रणाली का विकास है जिसमें संस्कृति और राजनीति का सहानुभुतिपूर्ण सहयोग एवं समन्वय होगा।

8.2 **भौतिक पारिस्थितिक नारीवाद–** जर्मनी की **मरिया मिज** और **वेरोनिका बेनहोल्ड थॉमसन**, ऑस्ट्रेलिया की **एरियल सालेह**, यू. के. की **मैरी मिलर**, पेरू की**एना इस्ला** और भारत की **वन्दना शिवा** पारिस्थितिक नारीवाद के प्रमुख विचारक हैं। भौतिकवादी दृष्टिकोण के अनुसार श्रम, शक्ति और सम्पत्ति जैसे संस्थानों में नारी और प्रकृति को प्रभुत्व के स्रोत के रूप में देखा जाता है। बात बस इतनी सी है उत्पादन और प्रजनन के गुण के कारण इन दोनों में समानता है।[22] पारिस्थितिक नारीवाद में इस आयाम को **समाजवादी पारिस्थितिक नारीवाद** या **मार्क्सवादी पारिस्थितिक नारीवाद** के रूप मे जाना जाता है। **कैरोलिन मर्चेंट** के अनुसार–**सामाजिक पारिस्थितिक नारीवाद आर्थिक और सामाजिक पदानुक्रमों को उलटकर महिलाओं की मुक्ति की वकालत करता है**। इस तरह पारिस्थितिक नारीवाद उन सभी सामाजिक पदानुक्रमों को समाप्त करने का प्रयास है जो जैविक और सामाजिक प्रजनन पर वस्तुओं के उत्पादन का पक्ष लेता है।

8.3 **आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक पारिस्थितिक नारीवाद–** आध्यात्मिक पारिस्थितिक नारीवाद पारिस्थितिक नारीवाद की एक अन्य शाखा है, यह **स्टारहॉक, रियान ईस्लर, और कैरल जे. एडम्स** जैसे पारिस्थितिक नारीवादी लेखकों के बीच लोकप्रिय है। **स्टारहॉक** इसे पृथ्वी–आधारित आध्यात्मिकता कहते हैं, जो यह मानती है कि पृथ्वी जीवित है, और हम सब परस्पर जुड़े हुए समुदाय हैं।[23] आध्यात्मिक पारिस्थितिक नारीवाद विशिष्ट धर्म से न जुड़कर, **वसुधैव कुटुंबकम** की भावना पर आधारित मानव धर्म का पक्षधर है, जो प्रेम, करुणा, अहिंसा एवं समानता के मूल्यों के आसपास केंद्रित है।[24] प्रायः, पारिस्थितिक नारीवादी अधिक प्राचीन परंपराओं पर विश्वास करते हैं, जैसे कि गौ–पूजन, प्रकृति–पूजन आदि और उनकी सनातन परम्पराओं पर अटूट आस्था एवं विश्वास।[25] **कैरोलिन मर्चेंट** ने अपनी पुस्तक **रेडिकल इकोलॉजी** में आध्यात्मिक पारिस्थितिक नारीवाद को **सांस्कृतिक पारिस्थितिकतावाद** के रूप में संदर्भित किया है। **मर्चेंट** के अनुसार, सांस्कृतिक पारिस्थितिक नारीवाद, **मूर्ति, सूर्य–चंद्रमा पूजन, जानवरों और महिला प्रजनन प्रणाली पर केंद्रित प्राचीन अनुष्ठानों के पुनरुद्धार के माध्यम से महिलाओं और प्रकृति के बीच संबंध स्थापित करता है।**[4] सांस्कृतिक पारिस्थितिक नारीवाद प्रकति की उत्पत्ति उसके विकास, प्रजनन एवं पोषण की नैतिकता और मानव–प्रकृति के अंतर्संबंधों को महत्व देता हैं। यद्यपि पारिस्थितिक नारीवादी विश्लेषण का दायरा गतिशील है।[6]अमेरिकी लेखक और पारिस्थितिक नारीवादी **चार्लेन स्प्रेटनक** ने पारिस्थितिक नारीवादी कार्य को वर्गीकृत करने का एक सूत्र प्रस्तुत किया है–

- राजनीतिक सिद्धांत के साथ–साथ इतिहास के अध्ययन के माध्यम से।
- प्रकृति आधारित धर्मों के विश्वास और अध्ययन के माध्यम से।
- पर्यावरणीय अध्ययन के माध्यम से।

9. **अवलोकन–** विश्व के अनेक समुदायों में महिला विचारकों द्वारा विभिन्न पारिस्थितिक नारीवादी दृष्टिकोण उभारे गए, परन्तु उत्तर अमेरिकी विचारधारा का प्रभुत्व रहा। **ग्रेटा गार्ड** और **लॉरी ग्रुएन** द्वारा 1993में **इको फेमिनिज्मःटूवर्ड ग्लोबल जस्टिस एंड प्लेनेटरी हेल्थ** नामक लेख में पारिस्थितिक नारीवाद की विस्तृत रूपरेखा देखने को मिलती है। वैश्विक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर बनाए गए इस प्रारूप में वर्तमान को बेहतर बनाने के तरीके बताये गये हैं। उत्तरी अमेरिकी विचारकों **रोजमेरी रूथर** और **कैरोलिन मर्चेंट** के काम के परिप्रेक्ष्य में **गार्ड** और **ग्रुएन** का तर्क है कि इस प्रारुप के चार पक्ष हैं–

- ब्रह्मांड का यांत्रिक भौतिकवादी स्वरूप जो वैज्ञानिक क्रांति के परिणामस्वरूप बना और बाद में सभी आयामों को अनुकूलित करने के लिए केवल संसाधनों में कमी कर, मृत निष्क्रिय पदार्थ का उपयोग किया जाने लगा।
- पितृसत्तात्मक धर्मों का उदय और लिंग पदानुक्रम की स्थापना के साथ–साथ उनकी आसन्न प्रभुता को नकारना।
- स्वयं और द्वैतवाद में अन्तर्निहित शक्ति और प्रभुत्व के नैतिक वर्चस्व का समर्थन एवं स्थापन।
- पूँजीवाद और धनार्जन एकमात्र उद्देश्य मानकर उसकी आपूर्ति के लिए यंत्रीकीकरण पर बल देना, परिणाम स्वरूप जानवरों, पृथ्वी और अपेक्षित लोगों के शोषण एवं विनाश का प्रारम्भ।

उनका मानना है कि इन चार उपरोक्त कारकों ने हमें उस स्थान तक पहुँचाया है जिसे पारिस्थितिक नारीवादी "प्रकृति और संस्कृति के बीच अलगाव" के रूप में देखते हैं।[8]

9. **पारिस्थितिक नारीवाद की आलोचना–** 1980 और 1990 के दशक में **अनिवार्यवाद** के रूप में पारिस्थितिक नारीवाद की भारी आलोचना होने लगी। आलोचकों का मानना था कि पारिस्थितिक नारीवाद पितृसत्तात्मक प्रभुत्व और मानदंडों को मजबूत करता है। पारिस्थितिक नारीवाद पुरुषों और महिलाओं के बीच, कठिन द्वंदवाद का समर्थक है। पारिस्थितिक नारीवाद की कुछ आलोचनाएँ बताती हैं कि महिलाओं और पुरुषों, प्रकृति और संस्कृति के बीच का द्वंद एक द्वैतवाद उत्पन्न करता है जो बहुत कठोर है। यह महिलाओं और पुरुषों के बीच मतभेद पर केंद्रित है। इसका तात्पर्य हुआ कि पारिस्थितिक नारीवाद भी प्रकृति की सामाजिक स्थिति के साथ महिलाओं की सामाजिक स्थिति को दृढ़ता से सह–संबंधित करता है, न कि गैर–अनिवार्य दृष्टिकोण से कि प्रकृति के साथ–साथ महिलाओं में नर और नारी दोनों के गुण होते हैं। स्त्री गुणों को अक्सर कम योग्य और प्रकृति को संस्कृति से कम मूल्यवान आंका जाता है।[26]

पारिस्थितिक नारीवाद सामयिक एवं सामाजिक संरचनाओं में भागेदारी के संबंध में एक अलग दृष्टिकोण पर जोर देता है। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य मुक्ति–आधारित नारीवादी आंदोलनों के विपरीत था। यह मुख्यधारा के नारीवाद एवं सामाजिक स्थिति के साथ मजबूती से बंधा हुआ है, और वर्तमान में सामाजिक और राजनीतिक संरचना के भीतर लैंगिक समानता को बढ़ावा देने का प्रयास करता है।[27]यह महिलाओं के लिए व्यापार एवं अन्य प्रतिष्ठानों में विभिन्न पदों को प्राप्त करना संभव बनाता है। पारिस्थितिक नारीवादी विचारक नोएल स्टर्जन ने एक साक्षात्कार में कहा है कि जो विरोधी अनिवार्यतावाद की आलोचना कर रहे हैं, वह सिद्धांतवादियों और कार्यकर्ताओं दोनों के विशाल और विविध समूहों को एकत्र करने के लिए रणनीति विकसित कर रहे हैं।[28]इसके अतिरिक्त चार्लेन स्प्रेटनक के अनुसार, आधुनिक पारिस्थितिक नारीवाद प्रजनन तकनीक, समान वेतन एवं अधिकार, विषाक्त प्रदूषण, तीसरी दुनिया के विकास में नारी की भागेदारी और अन्य विभिन्न मुद्दों से संबंधित है।[7]

पारिस्थितिक नारीवाद जैसे ही 21वीं सदी में आगे बढ़ा, आलोचनाओं का शिकार हो गया। प्रतिक्रिया में उन्होंने भौतिकवादी दृष्टि से शोध करना प्रारम्भ कर दिया और अपने लक्ष्यों से भ्रमित हो गया, अब समलैंगिक पारिस्थितिकी, वैश्विक नारीवादी समस्याओं का समाधान, पर्यावरण न्याय, लैंगिक समानता उनके विषय थे।[29] अनिवार्यता की आवश्यकता अधिकतर उत्तर अमेरिकी विचारकों में पाई गई। यूरोप और वैश्विक दक्षिण में, जाति, वर्ग, नस्ल, लिंग और प्रजातियों के वर्चस्व को अधिक महत्व दिया गया था।

11. **पारिस्थितिक नारीवादी सिद्धांतकार–**

फ्रांस्वा डीउबोनः पृथ्वी को बचाने के लिए महिलाओं ने पारिस्थितिक क्रांति का आह्वान किया। साथ ही लैंगिक संबंधों और प्राकृतिक दुनिया के साथ मानवीय संबंधों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में प्रभावी प्रयास।
ग्रेटा गार्डः अमेरिकी पारिस्थितिक नारीवादी विद्वान और कार्यकर्ता हैं। इस क्षेत्र में उनका प्रमुख योगदान **शाकाहार और पशु मुक्ति के विचारों को प्रोप्साहित करता है।** वे एक **यू एस. ग्रीन पार्टी और ग्रीनमूवमेंट** की नेता हैं।
सुसान ग्रिफिनः एक कट्टरपंथी नारीवादी दार्शनिक, और नाटककार विशेष रूप से अपने अभिनय, हाइब्रिड–फॉर्म इकोफेमिनिस्ट के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने **यू.सी. बर्कले** के साथ–साथ **स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी** और **कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रल स्टडीज** में एक सहायक प्रोफेसर के रूप में पढ़ाया।
मैरी मिलरः समाजशास्त्री दार्शनिक जो सहकारी योजनाओं में कार्यरत रहे, अपनी पुस्तक **ब्रेकिंग द बाउंड्रीज ऑफ फेमिनिज्म एंड इकोलॉजी** में पारिस्थितिक नारीवाद का भौतिकवादी विश्लेषण किया हैं।
मारिया मिजः एक **जर्मन सामाजिक आलोचक** हैं, जो **पूरे यूरोप और भारत में नारीवादी कार्यों में शामिल रही** हैं। वह स्थानीय और **वैश्विक स्तर** पर विशेष रूप से–**पितृसत्ता, लैंगिक समानता, गरीबी और पर्यावरण संरक्षण** पर काम करती हैं।
एरियल सल्लेहः ऑस्ट्रेलिआई पारिस्थितिकी नारीवादी विचारक का मानना है कि **पारिस्थितिकी नारीवाद का भौतिकवादी दृष्टिकोण, हरित राजनीति, पर्यावरणीय समाजवाद, अनुवांशिक अभियांत्रिकी और जलवायु नीति** के साथ गहरा संबंध है। यह रिश्ता सौहार्द पूर्ण होना चाहिए।
ग्रेटा थनबर्गः स्वीडन विचारक का संदर्भ इस प्रसंग के लिये उपयुक्त है कि **जलवायु परिवर्तन की विकट त्रासदी से निपटने के लिये पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन** कितना आवश्यक है।
वन्दना शिवाः भारतीय विचारक एवं वैश्विक पारिस्थितिकीय नारीवाद आंदोलन में एक प्रमुख भूमिका निभायी है। उनका मानना है कि दैनिक क्रिया–कलापों में नारी, प्रकति के साथ एक अभिन्न अनमोल सम्बन्ध जोड़ती है। वे पारिवारिक अर्थव्यवस्था और सामाजिक प्रगति को पर्यावरण के साथ मिलकर बहुमूल्य बना देती हैं। उनके लेख **इम्पॉवरिंग वूमेन** (महिलाओं के सशक्तीकरण) के अनुसार, शिवा यह सुझाव देती है कि भारत में महिलाओं को नियुक्त करने के प्रति अधिक केंद्रित रहने वाली एक कृषि प्रणाली को पुनः स्थापित कर कृषि के प्रति एक अत्यंत सकारात्मक एवं उत्पादक दृष्टिकोण प्राप्त किया जा सकता है। वे प्रचलित **बहिष्करण के पितृसत्तात्मक तर्क** के विरुद्ध दलील देती हैं और यह दावा करती हैं कि एक नारी केन्द्रित प्रणाली वर्तमान प्रणाली को एक तरीके से बदल देगी।

12. **निष्कर्ष–** वर्तमान में पारिस्थितिक नारीवाद विविधता का प्रतीक है क्योंकि यह लगातार विकसित हो रहा है। अतः किसी भी पारिस्थितिक नारीवादी सिद्धांत या व्यवहार के आशय को चित्रित करना असंभव है। पारिस्थितिक नारीवाद के भीतर अनिवार्यता, एक सामंजस्यपूर्ण अतीत या भविष्य के आकर्षक सुनहले सपने, अराजनैतिक आध्यात्मिकता एवं सिद्धांत और सामाजिक परिवर्तन के बीच संबंध का जीवंत चित्रण हैं। फिर भी पारिस्थितिक नारीवाद का संकल्प प्रकृति और संस्कृति, मन और शरीर, नर और नारी, कारण और भावना, आत्मा और पदार्थ, सिद्धांत और क्रिया और अंततः मनुष्यों और पृथ्वी के बीच अंतरंगता स्थापित कर विभाजन के कारण हुए दर्द का निवारण करना चाहता हैं।

References

1. LingChen (2014)Ecological criticism based on social gender: The basic principles of ecofeminism.cscanada.net. Higher Education of Soc., Vol. 7, No. 1, pp. 1-12.
2. Merchant, Carolyn (1992) "Chapter 8" In Radical Ecology: the search for a livable world. New York: Routledge, p. 184.
3. Warren, Karen (2002) "Karen Warren's Ecofeminism", Ethics & the Environment, Vol. 7, No. 2, pp. 12–26.doi:10.2979/ETE.2002.7.2.12.
4. Merchant, Carolyn (2005) "Ecofeminism", Radical Ecology, Routledge. pp.193–221.
5. MacGregor, Sherilyn (2006) Beyond mothering earth: ecological citizenship and the politics of care. Vancouver, UBC Press, p. 286. ISBN 978-0-7748-1201-6.
6. Adams, Carol (2007) Ecofeminism and the Sacred, Continuum, pp. 1–8, "Ecofeminist Movements" (PDF).
7. Spretnak, Charlene (1990) "Ecofeminism: Our Roots and Flowering" Reweaving the World: The Emergence of Feminism, edited by Irene Diamond and Gloria Ornstein, Sierra Club Books, pp. 3-14.
8. Gaard, Greta and Gruen, Lori (1993) "Ecofeminism: Toward Global Justice and Planetary Health". Society and Nature,Vol. 2, pp. 1–35.
9. Johanna (2018) "Feminism, Capitalism, and Ecology", Hypatia Vol. 33, No. 2, pp. 216–234. doi:10.1111/hypa.12395. S2CID 149338235.
10. Leopold(1949) A Sand County Almanac, Oxford University Press, New York, USA.
11. Boyer-Rechlin, Bethany (2010) "Women in Forestry: A Study of Kenya's Green Belt Movement and Nepal's Community Forestry Program", Scandinavian Journal of Forest Research, Vol. 25, pp. 69–72.
12. Blum, Elizabeth D. (2008) Love Canal Revisited: Race, Class, and Gender in Environmental Activism. Kansas, University Press of Kansas, ISBN 978-0-7006-1560-5.
13. Lamar, Stephanie (1991) "Ecofeminist Theory and Grassroots Politics", Hypatia, Vol. 6, No. 1, pp. 28–45.doi:10.1111/j.1527-2001.1991.tb00207.x. S2CID 145518119.
14. Doverspike, Nicole (2012) "Mother's Milk Project", English 487W Blog: West of Everything. Retrieved October 9, 2016.
15. Gottlieb, Roger S.(1996) "Bishnois: Defenders of the Environment" This Sacred Earth: Religion, Nature, Environment, Psychology Press, pp. 159-160
16. Mishra, A. and Tripathi, S.(1978) Chipko movement: Uttaranchal women's bid to save forest wealth, New Delhi: People's Action/Gandhi Book House.
17. Kesharwani, Sakshi (5 September 2020) "Devaki Amma – An unsung hero". Times of India. Retrieved 9 January 2021.
18. Shiva, Vandana(1990) "Development as a New Project of Western Patriarchy." Reweaving the World: The Emergence of Feminism, edited by Irene Diamond and Gloria Ornstein, Sierra Club Books, pp. 189-200.
19. Laura Hobgood-Oster (2012) "Ecofeminism: Historic and International Evolution" (PDF), Retrieved March 17, 2012.
20. Gaard, Greta Claire (2002) "Vegetarian ecofeminism: A review essay". Frontiers: A Journal of Women Studies, Vol. 23, No. 2, pp.117–146.doi:10.1353/fro.2003.0006.S2CID 143879458.

21. Laura Hobgood-Oster (2012) "Ecofeminism: Historic and International Evolution" (PDF). Retrieved March 17, 2012.
22. "Do Feminists Need to Liberate Animals, Too?". Carol J. Adams, Retrieved 2019-04-30.
23. Merchant, Carolyn (2005) "Spiritual Ecology", Radical Ecology, Routledge, pp. 124–125.
24. Starhawk (1990) "Power, Authority, and Mystery: Ecofeminism and Earth-based Spirituality." Reweaving the World: The Emergence of Ecofeminism, edited by Irene Diamond and Gloria Orenstein, Sierra Club Books, 1990, pp. 73-86.
25. Gaard, Greta (2011) "Ecofeminism Revisited: Rejecting Essentialism and Re-Placing Species in a Material Feminist Environmentalism". Feminist Formations, Vol. 23, No. 2, pp. 26–53. doi:10.1353/ff.2011.0017. S2CID 145195744.
26. Hooks, bell (1984) "Feminist Theory: From Margin to Center" Cambridge, MA: South End Press.
27. Michiels, Nete (2013) "Social Movements and Feminism." Women & Environments International Magazine, no. 92/93, pp. 15-17.
28. Warren, Karen J. (2015) "Feminist Environmental Philosophy", The Stanford Encyclopedia of Philosophy, Metaphysics Research Lab, Stanford University.
29. "Women Always Clean Up the Mess", Sociological Spectrum,Vol. 31, No. 3, pp. 342–368.